(कहानी संग्रह)

सजा किसे मिली

सुधा आदेश

सजा किसे मिली ?

(कहानी संग्रह)

lq/kk vkns'k

समर्पण

समर्पित...
उन बालकों, किशोरों
और युवाओं को,
जो वंचित रहे
अपने पालनहार के
प्यार से, दुलार से...।

समर्पित...
उन पालकों को
जो सार्थक प्रयासों के बावजूद
अपने दिल के टुकड़ों को
सुकून के पल देने में
असमर्थ रहे...।

समर्पित...
उस समाज को
जो समस्त बुराइयों में भी
अच्छाइयों को ढूँढ़ कर
सामाजिक ताने–बाने को
सहेजने में कामयाब रहा...।

समर्पित...
उस आस को
जो टूटन, घुटन
और संत्रास के
पलों में भी
संजीवनी ढूँढने का
प्रयत्न करती रही...।

समर्पित...
हर दिल की
उस संजीवनी को
जो हर अवस्था में
निरंतर चलने की
प्रेरणा देती रही...।

अपनी बात

जीवन की गति अनोखी है, जीवन का चलना अनवरत प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया में अक्सर अवरोध भी आते हैं जो मार्ग को कंटकाकीर्ण बन. ाने में कोई कसर नहीं छोड़ते, पर मनुष्य का आत्मबल, आत्मविश्वास एवं परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की जिजीविषा दुर्गमता में से भी सरलता की राह खोज ही लेती है... यही सरलता, सहजता मनुष्य की सहज गति को न केवल कुंद होने से बचाती है वरन् उसे अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में भी सहायता करती है ।

पृथ्वी के विकास की यात्रा में मनुष्य का अहम् योगदान है... स्त्री और पुरूष, पृथ्वी तथा मानव जीवन के विकास यात्रा की गाडी के दो पहिये हैं... विकास यात्रा को भलीभाँति सुचारू रूप से आगे बढाना है तो इन पहियों को आपस में सामंजस्य बिठाना होगा... सामंजस्य शक्ति से उत्पन्न संतति को उत्तम संस्कार देने होंगे, उचित परवरिश देनी होगी तभी इस विश्वरूपी गुलदस्ते का हर फूल अपनी खुशबू बिखेरने में कामयाब हो पायेगा ।

यह तो हुई आदर्शवादिता की बात पर अक्सर ऐसा होता है कि मानव की विकास यात्रा के ये दोनों पहिये अपनी लय भूलकर लडखडाने लगते हैं, उनके लिये उनकी अपनी इच्छा, अनिच्छा, कैरियर इतना महत्वपूर्ण होता जाता है कि उनके पारिवारिक दायित्व पीछे छूटने लगते हैं... ऐसे युगल के जीवन में एक समय ऐसा भी आता है जब उनके पास न अपने लिये समय होता है न अपने बच्चों के लिये और न ही अपने बूढ़े होते माता-पिता के लिये... सच तो यह है कि वे अपने अहंकार, महत्वाकांक्षा तथा भौतिक सुख प्राप्ति की मृगमरीचिका हेतु बाह्य कर्मक्षेत्र और आंतरिक (पारिवारिक) कर्मक्षेत्र और कर्तव्यों में सामंजस्य नहीं बिठा पाते जिसके कारण उत्पन्न विषमता ऐसी परिस्थितियों को जन्म देती है जिसमें न केवल

युगल वरन् उनकी संतति भी आचार-विचार को त्याग कर विद्रोह पर उतर आती है, बस यहीं से प्रारंभ होता है... क्षरण... आपसी रिश्तों का, मूल्यों का और त्याग और बलिदान की भारतीय संस्कृति का... तब कहीं न कहीं मानव मन यह सोचने को मजबूर हो जाता है कि मानवीय मूल्यों में गिरावट से सजा किसको मिली ?

एकाकी परिवार तथा ' हम दो हमारे दो ' की मानसिकता ने हमारे सामाजिक दायरे को संकुचित करने का काम किया है, इसमें दो राय नहीं है कि कुछ वर्षो पश्चात् शायद हमारे बच्चे चाचा, ताऊ, बुआ, मौसी और मामा जैसे अनेक गर्माहट वाले रिश्तों की सुकून भरी छाँव को भूल जायेंगे... उनके मासूम मस्तिष्क में नानी-दादी की कहानी के स्थान पर मोबाइल, आई पैड के गेम होंगे, इन्टरनेंट की छाया में पलता-बढता बच्चा रिश्तों के अनमोल क्षणों को शायद ही महसूस कर पायेगा... क्या इन यांत्रिक संसाधनों के बीच पनपता उसका बचपन इनकी तरह ही संवेदनहीन नहीं हो जायेगा... संवेदनहीन जीवन रिश्तों की गर्माहट महसूस कर पाने में असफल हो तो दोष किसका ?

अपनी भारतीय संस्कृति को अक्षुण बनाये रखना है तो हमें अपने पुरातन मूल्यों का संवर्धन और संरक्षण करना होगा... अपनी संतति में विद्रोह के सूर्य के स्थान पर चंद्रमा की शीतलता, निर्मलता की आत्मचेतना जगानी होगी, यह तभी संभव है जब हम बच्चों को सुरक्षित वातावरण प्रदान करें, उनकी मासूमियत को मुरझाने न दें... याद रखें बच्चे देश का भविष्य हैं, जैसा उन्हें सींचेंगे वैसा ही फल प्राप्त करेंगे ।

जीवन अमूल्य, क्षरण रोकें,
जन्मने दें, पनपने दें
सुकोमल तंतुओं को
संवेदनाओं, भावनाओं के,
नवकुसुम खिल उठेंगे
धरा के उद्यान में...।

सुधा आदेश

fo'k;&lwph

1. पुनर्मिलन 9

2. सजा किसे मिली...? 18

3. दूर हुए अंधेरे 37

4. प्रायश्चित 46

5. जीवनदान 60

6. एक छोटा सा प्रयास 70